किसानों के उत्थान के लिए आलू की आर्थिक खेती

अभिनीत सिंह
सहायक प्राध्यापक, इंटीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ

आलू विश्व में सबसे ज्यादा लोकप्रिय और प्रयोग की जाने वाली सब्जियों में से एक है। आलू की खेती भी लगभग पुरे विश्व में की जाती है। भारत में इसे 16 वी सदी में पुर्तगालियों द्वारा लाया जाना माना जाता है। आलू पौष्टिक तत्वों का खजाना है, इसमें स्टाच, जैविक प्रोटीन, सोडा, पोटाश और विटामिन ए व डी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते है।

आलू की सम्भावनाओं को देखते हुए, आलू की उन्नत खेती किसानो के लिए वरदान साबित हो सकती है। भारत में भी आलू की बड़े क्षेत्रफल में खेती की जाती है। परन्तु अच्छी तकनीकी और जानकारी के आभाव में किसान भाई इसकी अच्छी पैदावार नही ल पाते हैं। यहां हम किसान भाइयों को उन छोटे छोटे उपायों से अवगत कराना चाहेंगे जिनको उपयोग में लाकर किसान अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

आलू के लिए जलवायु

आलू की अच्छी पैदावार के लिए शीत जलवायु की आवश्यकता होती है। आलू की वृद्धि और विकास के लिए 15 से 25 डिग्री, इसके अंकुरण के लिए 25 डिग्री, वनस्पति तरक्की के लिए 20 डिग्री और कन्द के विकास के लिए 15 से 20 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है। 33 डिग्री सेल्सिस तापमान से ऊपर आलू की खेती प्रभावित होती है व आलू का विकास रुक जाता है।

उपयुक्त मिट्टी

आलू की खेत विभिन्न प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है। परन्तु अच्छे उत्पादन के लिए जीवांशयुक्त और भुरभरी और जल निकासो वाली भूमि उपयुक्त मानी जाती है। इसके साथ साथ बलुई दोमट और दोमट मिट्टी भी आलू की खती के लिए अच्छी मानी जाती है। आलू की खेती के ले मिट्टी की अम्लीय और क्षारीय क्षमता पी.एच. मान 5.1 से 6.7 तक उपयुक्त माना जाता है।

खेत की तैयारी

खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए। उसके साथ साथ 3 से 4 जुताई देशो हल या कल्टीवेटर से करनी चाहिए। मिट्टी को भुरभुरा बना ल क्योकि आलू मिट्टी की फसल होती है। जितनी भूमि की जुताई होगी उतनी ही आलू की पैदावार अच्छी होगीद्य खेत को समतल करन के लिए पाटा लगाना ना भूलें।

उन्नत किस्में

बेहतर पैदावार के लिए किस्म का चुनाव करना अति आवश्यक होता है। आलू की सामान्य और संकर किस्में इस प्रकार हैं।

क्र सं	किस्म का नाम	पकने का समय (दिन)	उत्पादन (प्रति हेक्टेयर) क्विंटल	विशेषता
	कुफरी अलंकार	66–75	200–250	अंगमारी रोग के लिए प्रतिरोधक
	कुफरी चन्द्रमुखी	80–90	200–250	सफेद व बड़े कन्द
	कुफरी नवताल जी 2524	75–80	200–250	कन्द मध्यम, गुदा हल्का पिला

	कुफरी बहार 3792 ई	90–110	200–260	सफेद व बड़े कन्द
	कुफरी बादशाह	100–130	200–275	सफेद व बड़े कन्द
	कुफरी सिंदूरी	120–125	300–400	बड़े व मध्यम आकर कन्ध
	कुफरी देवा	120–125	300–400	बड़े व मध्यम आकर कन्ध
	कुफरी लवकर	100–120	300–400	बड़े व सफेद कन्ध
	कुफरी स्वर्ण	100–110	275–300	मध्यम कन्ध, पिला गुदा
	कुफरी अशोका	70–90	200–250	बड़े व सफेद कन्द
	कुफरी ख्याति	75–90	280–340	कन्द अंडाकार, चपटे सफेद
	कुफरी पुखराज	75–100	350–370	सफेद,अंडाकार, गूदा पिला

आलू की संकर किस्म इस प्रकार हैं:–

1. कुफरी जवाहर जेएच 222: यह किस्म 100 से 110 दिन में तैयार हो जाती है, और यह झुलसा और फोम रोग की प्रतिरोधी किस्म है। इसकी पैदावार 270 से 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

2. ई 4486: यह किस्म 125 से 135 दिन में तैयार होती है, इसकी पैदावार 250 से 300 क्विंटल प्रति हेक्टयर है।

बीज बुवाई

1. किसान भाइयों को चाहिए की वे बीज या तो सरकारी संस्थाओं से खरीदे या फिर विश्वसनीय एजेंसियों से ही प्राप्त करें। आलू की बुवाई के लिए 30 से 45 ग्राम वाले अच्छे अंकुरित बीज का उपयोग करना चाहिए। समान्यत आलू की 25 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है।

2. आलू बीज को बुवाई से पहले उपचारित करना अति आवश्यक है, इसके लिए 3 ग्राम डाइथेन एम 45 या 2 ग्राम बाविस्टिन प्रति किलोग्राम बीज को पानी के घोल में 30 मिनट तक डुबो कर रखे और छाया में सुखाकर बुवाई करनी चाहिए।

3. आलू की अगेती किस्मों की बुआई का उपयुक्त समय 1 से 20 सितंबर और सामान्य किस्मों का 10 से 15 अक्तूबर होता है। लाइन से लाइन की दुरी 60 सेंटीमीटर और आलू से आलू की दुरी उसके बीज के आकर पर निर्भर होती है छोटी आलू के लिए 15 और बड़े के लिए 40 सेंटीमीटर उपयुक्त रहती है।

जल और खाद प्रबंधन

1. आलू की फसल में सिंचाई आवश्यकतानुसार करनी चाहिए, आमतौर पर 8 से 10 सिंचाई होती है, पहली सिंचाई बुवाई के 10 से 15 दिन बाद करनी चाहिए और खुदाई के 10 दिन पहले सिंचाई बंद कर देनी चाहिए।

2. आलू की अच्छी पैदावार के लिए बुवाई से पहले जुताई करते समय 150 से 200 टन गोबर की खाद मिटटी में मिलनी चाहिए, इसके साथ 180 किलाग्राम नाइट्रोजन, 80 किलोग्राम फास्फोरस 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट और 120 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की आवस्यकता होती है। खाद की पूरी मात्रा बीज बुआई से पहले देनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

आलू की बुवाई के 20 से 25 दिन बाद मेड़ों के बीच खुरपी, क्सोला, फावड़ा या अन्य यंत्र से निराई गुड़ाई करनी चाहिए। जिसे खरपतवार फसल को प्रभावित न करे और दूसरी निराई गुड़ाई में आलू के पौधों को मिटटी चढ़ानी चाहिएद्य यदि आप खरपतवार पर कीटनाशक से नियंत्रण चाहते है तो पेंडामेथलिन 30

प्रतिशत 3.5 लिटर का 900 से 1000 लिटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 2 दिन तक प्रति हेक्टेयर छिड़काव कर सकते है। जिसे खरपतवार का जमाव ही नही होगा।

रोग व कीट रोकथाम

1. आलू की फसल में प्रमुख रोग झुलसा, पत्तिया का मुड़ना और चित्ती रोग है। इनके उपचार के लिए रोग रोधी किस्मो का चुनाव करना चाहिए। इसके साथ साथ रोगी पौधों को खेत से उखाड़ कर मिटटी में दबा देना चाहिए। कीटनाशक रोकथाम के तौर पर रोगों के लक्षण दिखाई देने से पहले मैन्कोजेब 0.2 प्रतिशत का घोल बनाकर हर 7 से 10 दिन में छिड़काव करना चाहिए या 2 ग्राम डाइथेन एम 45 प्रति लिटर पानी का घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए।

2. आलू की फसल में प्रमुख कीट जैसिड और माहू जैसे फसल कुतरने वाले कीड़े लगते है इनकी रोकथाम के लिए 2 मिलीलीटर क्लोरोफयरिफास प्रति लिटर पानी में घोल बनाकर हर 15 दिन में 3 बार छिड़काव करना चाहिएद्य

फसल की खुदाइं और पैदावार

1. आलू की फसल की खुदाई से पहले यह सुनिश्चित कर ले की किस्म कोन से है और पकने का समय क्या है, या फिर अच्छे भाव के लिए आप 8 से 10 दिन पहले भी खुदाई कर सकते है।

2. आलू की पैदावार किस्म और समय पर निर्भर करती है वैसे आमतौर पर 300 से 350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर समान्य किस्म की पैदावार होनी चाहिए।